गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 158
दि. 07.10.2025,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

विकास सप्ताह

भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री एवं
गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने
24 साल पहले 7 अक्टूबर 2001 को
पहली बार मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी।

24 साल...
जन-विश्वास, सेवा और समर्पण के

- गरबा, धोरडो और स्मृतिवन को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली
- सहकार से समृद्धि का सपना हुआ साकार
- MSP से किसानों को मिला सच्चा सम्मान
- नर्मदा का जल हर खेत और घर तक पहुँचा

- सशक्त नारी से समृद्ध भारत का निर्माण
- करोड़ों लोगों को मिल रहा है नि:शुल्क अनाज
- सेमीकंडक्टर मैन्युफ़ैक्चरिंग हब बन रहा गुजरात
- अक्षय ऊर्जा के निर्माण में अग्रणी गुजरात

विकसित भारत का ग्रोथ इंजन बनेगा गुजरात

संपादकीय

दहेज का दानव

बेटियों की साक्षरता में वृद्धि और कामकाजी क्षेत्र में लगातार उनकी बढ़ती भूमिका के बावजूद यदि दहेज उत्पीड़न की घटनाओं में वृद्धि होती है, तो यह शर्मनाक स्थिति ही कही जाएगी। राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो यानी एनसीआरबी की वह रिपोर्ट चौंकती है कि साल 2023 के दौरान देश में दहेज उत्पीड़न की घटनाओं में 14 फीसदी मामले ज्यादा दर्ज किए गए हैं। इस वर्ष के दौरान दहेज के कारण देशभर में 6,100 महिलाओं की मौत दर्ज की गई है। 21वीं सदी को ज्ञान की सदी कहा जा रहा है और हम रूढ़िवादी सोलहवीं सदी में जी रहे हैं। लड़कियों के साथ यदि परिवार व्यवस्था में भेदभाव होता है और भ्रूण हत्या की प्रवृत्ति बढ़ती है, तो उसके मूल में भी दहेज का अभिशाप ही है। लगातार खर्चीली होती उच्च शिक्षा व्यवस्था में बेटियों की शिक्षा पर बड़ा खर्च करने के बाद यदि मां-बाप को दहेज देना पड़ता है तो यह शर्मनाक स्थिति है। हालांकि, पिछले कुछ समय से पारिवारिक विवाद व अन्य कारकों को दहेज का मामला बनाने के कुछ मामले अदालतों की चिंता का भी विषय रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद समाज में दहेज के लिये उत्पीड़न की घटनाएं कटु सत्य है। यह भी एनसीआरबी की रिपोर्ट का यथार्थ है कि देश में हर रोज दहेज के लिये हत्याएं दर्ज हो रही हैं। बेटियों को पढ़ाने तथा सरकारों द्वारा उनके सशक्तीकरण के तमाम प्रयासों के बावजूद दहेज का दानव यदि अट्टहास कर रहा है तो यह हमारे समाज की असफलता ही कही जाएगी।

निस्संदेह, हमारे समाज में सोच में बदलाव लाने की जरूरत है। एक समय नारा लगाया जाता था कि दुल्हन ही दहेज है। इस नारे को हकीकत बनाने की जरूरत है। कहीं न कहीं इस संकट के मूल में पितृसत्तात्मक सोच भी जिम्मेदार है। जिसमें स्त्रियों को वाजिब हक न देकर उन्हें कमतर आंका जाता है। इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि दहेज प्रथा उन्मूलन के लिये सख्त कानून होने के बावजूद इस कुप्रथा पर रोक क्यों नहीं लग पा रही है। आखिर क्यों दहेज निषेध अधिनियम के अंतर्गत मामले लगातार बढ़ रहे हैं। समाज में साक्षरता वृद्धि और जागरूकता अभियानों के बावजूद स्थिति जस की तस है। विडंबना यह है कि दहेज उत्पीड़न के ज्यादातर मामले बड़े हिंदी प्रदेशों में सामने आए हैं। सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश में और फिर बिहार दूसरे नंबर पर है। ये हजारों मामले समाज में स्त्रियों की विडंबनापूर्ण स्थिति को ही दर्शाते हैं। समाज में उपभोक्तावादी सोच के चलते भी दहेज की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। हमें विचार करना होगा कि समाज में दहेज के संकट की जड़ों पर कैसे प्रहार किया जाए। राष्ट्र का विकास तब तक एकांगी ही रहेगा, जब तक आधी दुनिया को समाज में सम्मानजनक स्थान नहीं मिलता। दहेज के मामलों में न्याय भी शीघ्र देने की आवश्यकता है। आज जरूरत इस बात की है कि बेटियों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाए, ताकि वे समाज में सम्मानजक ढंग से बिना किसी पर निर्भर रहकर जीवनयापन कर सकें।

पार्टी का नाम 'आम आदमी पार्टी' लेकिन काम अमीरों को राज्यसभा सांसद बनाना

> वर्ष 2018 में इन्ही अरविंद केजरीवाल ने आशुतोष और कुमार विश्वास जैसे पार्टी के दिग्गज नेताओं को नजरअंदाज करके एनडी गुप्ता और सुशील गुप्ता को राज्यसभा भेजा था। तब से लेकर आज तक केजरीवाल के रवैए, जिद और मनमाने फैसले लेने की आदत में कोई बदलाव नहीं आया है।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पंजाब से राज्यसभा के लिए खाली हुई सीट से मशहूर उद्योगपति राजिंदर गुप्ता को उम्मीदवार घोषित कर दिया है। इसी के साथ एक बार फिर से वही पुराना सवाल खड़ा हो गया है कि पार्टी का नाम 'आम आदमी पार्टी' लेकिन काम अमीरों को राज्यसभा सांसद बनाना है। आखिर अरविंद केजरीवाल को हर बार राज्यसभा भेजने के लिए अमीर उद्योगपति ही क्यों पसंद आते हैं ? क्या आम आदमी के नाम पर राजनीति करने वाले केजरीवाल के पास कोई ऐसा आम आदमी नहीं है जिन्हें वो राज्यसभा सांसद बना सके। वर्ष 2018 में इन्ही अरविंद केजरीवाल ने आशुतोष और कुमार विश्वास जैसे पार्टी के दिग्गज नेताओं को नजरअंदाज करके एनडी गुप्ता और सुशील गुप्ता को राज्यसभा भेजा था। तब से लेकर आज तक केजरीवाल के रवैए, जिद और मनमाने फैसले लेने की आदत में कोई बदलाव नहीं आया है।

इस बार भी आम आदमी पार्टी ने पंजाब के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक और देश के प्रमुख उद्योगपति राजिंदर गुप्ता को 24 अक्टूबर को होने वाले राज्यसभा उपचुनाव के लिए अपना उम्मीदवार घोषित किया है। पंजाब विधानसभा में आम आदमी पार्टी का बहुमत है इसलिए राजिंदर गुप्ता को राज्यसभा सांसद बनने से कोई रोक नहीं सकता है।

मीडिया रिपोर्ट्स की माने तो, राजिंदर गुप्ता पंजाब के सबसे अमीर लोगों में से एक हैं। उनकी कुल संपत्ति 1.2 बिलियन डॉलर यानी लगभग 10 हजार करोड़ रुपए है। यह सीट जिन संजीव अरोड़ा के इस्तीफे के कारण खाली हुई है, वह भी एक उद्योगपति ही हैं। संजीव अरोड़ा का राज्यसभा सांसद का कार्यकाल अप्रैल, 2028 तक था। लेकिन कार्यकाल खत्म होने से पहले ही उन्हें पंजाब की लुधियाना वेस्ट विधानसभा सीट से चुनाव लड़वा दिया गया। विधायक बनने के बाद केजरीवाल के कहने पर भगवंत मान ने उन्हें अपनी सरकार में मंत्री बना दिया। आज तक यह सवाल एक अबूझ पहेली बना हुआ है कि, आखिर संजीव अरोड़ा में ऐसी क्या खासियत थी कि अरविंद केजरीवाल ने पहले उन्हें राज्यसभा सांसद बनवाया और फिर बीच में ही इस्तीफा दिलवा कर भगवंत मान की सरकार में मंत्री बनवा दिया। यह भी एक अबूझ पहेली ही बनी रहेगी कि उद्योगपति संजीव अरोड़ा के इस्तीफे से खाली हुई राज्यसभा सीट पर चुनाव लड़ने के लिए उद्योगपति राजिंदर गुप्ता को ही क्यों चुना गया? अब जरा इस तथ्य पर भी गौर कीजिए कि, पंजाब में राज्यसभा की 7 सीटें हैं, जिनमें से एक पर होने जा रहे उपचुनाव के लिए राजिंदर गुप्ता को उम्मीदवार बनाया गया है। जबकि छह अन्य आप राज्यसभा सांसदों की बात करें तो इसमें राघव चड्ढा और संदीप कुमार पाठक के अलावा आप के अन्य सांसदों में एक निजी विश्वविद्यालय के मालिक अशोक कुमार मित्तल, उद्योगपति विक्रमजीत सिंह और मशहूर क्रिकेटर हरभजन सिंह जैसे व्यक्ति शामिल हैं। ऐसे लोगों को राज्यसभा भेजने से पहले केजरीवाल को कम से कम अपनी पार्टी के कैडर को यह तो बताना ही चाहिए कि आखिर अशोक कुमार मित्तल, विक्रमजीत सिंह , हरभजन सिंह और अब राजिंदर गुप्ता जैसे लोगों ने आम आदमी और आम आदमी पार्टी के लिए क्या किया है?

प्रेरणा

अखंड प्रेम और अटूट विश्वास का उत्सव — करवा चौथ

करवा चौथ भारतीय संस्कृति का वह अनुपम पर्व है, जिसमें प्रेम, विश्वास, आस्था और समर्पण के सबसे पवित्र स्वर गूंजते हैं। यह केवल पति-पत्नी के रिश्ते का उत्सव नहीं, बल्कि नारी की उस अद्भुत शक्ति का भी प्रतीक है, जो अपने परिवार, समाज और संस्कृति को एक सूत्र में बाँधकर रखती है। यह दिन उस नारी के लिए है जो अपने पति के दीर्घ जीवन, सुख और समृद्धि की कामना के साथ स्वयं को संयम, भक्ति और आत्मबल की साधना में समर्पित करती है। करवा चौथ की रात केवल एक उपवास की रात नहीं होती, यह वह क्षण होता है जब स्त्री अपने प्रेम को तप में रूपांतरित करती है। सूर्योदय से चंद्रोदय तक निर्जल रहकर वह जो व्रत करती है, उसमें त्याग और श्रद्धा की गहराई होती है। जब चाँद निकलता है, जब उसके सामने वह अपने हाथों से छलनी उठाती है, और उस छलनी के पार अपने पति का चेहरा देखती है, तब उस क्षण में प्रेम, आस्था और समर्पण का जो संगम होता है, वह अव्यक्त होकर भी संसार को प्रेम की परिभाषा सिखाता है।

यह व्रत केवल पति की दीर्घायु का प्रतीक नहीं, बल्कि स्त्री के उस आत्मबल का उत्सव है जिसने युगों-युगों से परिवार की नींव को स्थिर रखा है। जब महिलाएँ सोलह श्रृंगार से सुसज्जित होकर एक साथ कथा सुनती हैं, मंगल गीत गाती हैं और करवे बदलती हैं, तब वहाँ केवल पूजा नहीं होती, बल्कि समाज में समरसता और सौहार्द की लहर फैलती है। इस दिन का प्रत्येक क्षण नारी की निष्ठा, धैर्य और विश्वास की गवाही देता है।

आधुनिक समय में भले ही जीवन की रफ्तार बदल गई हो, परंतु करवा चौथ का यह पर्व आज भी वही आध्यात्मिक गहराई और भावनात्मक ऊष्मा लिए हुए है। यह हमें यह सिखाता है कि जीवन में भले परिवर्तन हों, पर रिश्तों की नींव प्रेम और विश्वास पर ही टिकती है। जब पत्नियाँ चाँद को अर्घ्य देती हैं, तो वह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं होता, बल्कि वह उस गहरे भाव का प्रतीक होता है जहाँ प्रेम स्वयं ईश्वर बन जाता है और आस्था ही पूजा।

भारत की विविधता में करवा चौथ की अपनी अनूठी छटा है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली के घरों में यह पर्व ऐसे मनाया जाता है जैसे घर-आँगन स्वयं चाँदनी से नहा गए हों। हर द्वार पर दीपक की लौ टिमटिमाती है, हर चेहरे पर सुहाग की लालिमा दमकती है, और हर आँख में प्रतीक्षा का उजाला होता है। आज यह पर्व केवल भारत तक सीमित नहीं — विदेशों में बसे भारतीय परिवार भी इसे उसी श्रद्धा और उल्लास से मनाते हैं, मानो वे अपने देश की आत्मा को अपने साथ लिए घूम रहे हों।

'करवा चौथ' शब्द का अर्थ भी गहन प्रतीकात्मकता लिए हुए है — 'करवा' यानी मिट्टी का घड़ा, जो जीवनदायी जल का प्रतीक है, और 'चौथ' यानी चंद्रमा की चौथी तिथि, जो शीतलता, सौंदर्य और प्रेम का प्रतीक है। जब ये दोनों प्रतीक मिलते हैं, तो यह पर्व जीवन में संतुलन, समरसता और स्थायित्व का प्रतीक बन जाता है। प्राचीन काल में यह पर्व कृषि जीवन से भी जुड़ा था, जब फसलें पकने लगती थीं और महिलाएँ एक-दूसरे के घर जाकर मिट्टी के करवे भेंट करती थीं। यह केवल वस्तु का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि भावनाओं और सामाजिक बंधनों की अभिव्यक्ति थी।

इस पर्व से जुड़ी लोककथाएँ भी नारी की अटूट श्रद्धा और तपस्या को दर्शाती हैं। वीरवती की कथा इसका सर्वोत्तम उदाहरण है, जिसने भाइयों के छल से अपना व्रत अधूरा तोड़ दिया और अपने पति को खो दिया, पर अपनी दृढ़ निष्ठा और तपस्या से उसे पुनः जीवनदान दिया। यह कथा इस सत्य को उजागर करती है कि भारतीय स्त्री अपने प्रेम और विश्वास से मृत्यु तक को पराजित करने की क्षमता रखती है।

करवा चौथ के समय ऋतु परिवर्तन का उल्लास भी देखने को मिलता है। कार्तिक मास का यह काल, जब फसलें लहलहाती हैं और प्रकृति नई आभा से चमकती है, तब नारी भी उसी सौंदर्य, पवित्रता और नवजीवन की छटा अपने भीतर उतारती है। धरती और चाँद — दोनों इस समय मिलकर जीवन के संतुलन और स्थायित्व का प्रतीक बन जाते हैं।

वास्तव में, करवा चौथ केवल एक धार्मिक व्रत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का आत्मिक उत्सव है। यह हमें सिखाता है कि प्रेम में शक्ति है, आस्था में स्थिरता है, और नारी के संयम में सम्पूर्ण ब्रह्मांड की सृष्टि छिपी है। जब सुहागिन स्त्री चाँद की ओर देखती है, तो वह केवल अपने पति को नहीं, बल्कि उस अनंत पुरुष सिद्धांत को प्रणाम करती है जिसके बिना सृष्टि अधूरी है।

और जब वह दीपक जलाती है, तो वह अपने भीतर के विश्वास, निष्ठा और समर्पण की ज्योति को प्रज्वलित रखती है — जो समय के हर अंधकार को पराजित करती है, और यह बताती है कि जहाँ प्रेम और श्रद्धा है, वहाँ जीवन अमर है। यही कारण है कि करवा चौथ को सुहाग और समरसता का पर्व कहा जाता है — क्योंकि यह प्रेम, त्याग और एकता की वह पवित्र कड़ी है, जो युगों से भारतीय संस्कृति को उज्जवल बनाए हुए है।

हवा में गोलियों की दीवार खड़ी कर देगी भारत की नई तोप, सीमाओं की सुरक्षा के नये कवच का नाम है AK-630

भारतीय सेना द्वारा छह मोबाइल AK-630 बहु-नलिका वायु-रक्षा तोप प्रणालियों की आपात खरीद की घोषणा केवल एक तकनीकी अधिग्रहण नहीं, बल्कि एक व्यापक रणनीतिक संकेत है कि भारत अब अपने सीमांत क्षेत्रों और नागरिक आबादी को "नए युद्ध के नए हथियारों" से बचाने के लिए ठोस और त्वरित कदम उठा रहा है। देखा जाये तो आधुनिक युद्ध की वास्तविकता अब केवल पारंपरिक टैंकों या मिसाइलों तक सीमित नहीं रही; छोटे आकार के ड्रोन, घूमकर वार करने वाले गोले, रॉकेट और मोर्टार अब अग्रिम मोर्चों से कहीं आगे, सीधे आबादी केंद्रों को निशाना बना सकते हैं। ऐसे में यह निर्णय सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। AK-630 प्रणाली की खासियत इसकी गति और सटीकता में निहित है। 30 मिमी की यह बहु-नलिका तोप प्रति मिनट 3,000 राउंड तक दाग सकती है— जो मूलतः हवा में गोलियों की दीवार खड़ी कर देती है। इसका 4 से 6 किलोमीटर का प्रभावी दायरा सीमित अवश्य है, परंतु इसके उद्देश्य— यानी अंतिम क्षण में आने वाले छोटे या कम ऊँचाई वाले हवाई खतरों को निष्क्रिय करना के लिए यह आदर्श है। इसे 'क्लोज-इन वेपन सिस्टम' कहा जाता है और यह नौसेना के युद्धपोतों पर पहले से ही सफलतापूर्वक उपयोग में है। अब इसे स्थल-आधारित, मोबाइल स्वरूप में अपनाना भारतीय थलसेना की वायु रक्षा क्षमताओं में निर्णायक वृद्धि है।

इस प्रणाली को तेज़ी से तैनात करने की क्षमता, सर्व-कालिक फायर कंट्रोल सिस्टम और "आकाशतीर" वायु रक्षा नेटवर्क में एकीकरण इसे एक आधुनिक, नेटवर्क-संचालित युद्ध प्रणाली का अंग बनाते हैं। यह दर्शाता है कि भारतीय सेना अब एकीकृत वायु रक्षा नियंत्रण प्रणाली की दिशा में ठोस प्रगति कर रही है, जहाँ विभिन्न स्तरों की रक्षा प्रणालियाँ— लघु, मध्यम और दीर्घ दूरी की समन्वित रूप से कार्य करेंगी। इस निर्णय की पृष्ठभूमि में हाल ही में शुरू की गई तीन अत्यधिक गतिशील QRSAM (क्विक रिएक्शन सरफेस-टू-एयर मिसाइल) रेजिमेंटों की खरीद प्रक्रिया भी है, जिसकी लागत लगभग 30,000 करोड़ रुपये बताई गई है। QRSAM की 30 किमी से अधिक की मारक क्षमता और स्वदेशी विकास इसे भारत की "मेक इन इंडिया" रक्षा नीति का प्रतीक बनाती है। AK-630 जैसे छोटे दायरे के प्रणालियों और QRSAM जैसी मध्यम दूरी की मिसाइल प्रणालियों का संयोजन भारत को एक "मल्टी-लेयर्ड एयर डिफेंस नेटवर्क" की दिशा में ले जा रहा है— जो न केवल सीमा क्षेत्रों बल्कि आंतरिक रणनीतिक ठिकानों और शहरी केंद्रों को भी सुरक्षित करेगा। हम आपको बता दें कि यह पहल ऑपरेशन 'सिंदूर' के बाद अनुमोदित त्वरित खरीद तंत्र के अंतर्गत की जा रही है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पाकिस्तान द्वारा तुर्की-निर्मित ड्रोन और चीनी मिसाइलों के समन्वित उपयोग ने भारत के रक्षा विश्लेषकों को यह सिखाया है कि भविष्य का युद्ध न केवल तीव्र होगा, बल्कि अत्यधिक तकनीकी और अप्रत्याशित भी। उस संघर्ष में भारत की मौजूदा बहु-स्तरीय वायु रक्षा प्रणाली ने प्रभावी भूमिका निभाई थी, परंतु उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि "कम ऊँचाई वाले, तेज़ गति से बदलते हवाई खतरों" से निपटने के लिए नई पीढ़ी की प्रणालियों की आवश्यकता अपरिहार्य है।

AK-630 की तैनाती इस दिशा में एक निर्णायक उत्तर है। इसकी "स्मार्ट फायर" क्षमता— यानी लक्ष्य की गति, दिशा और ऊँचाई के आधार पर स्वचालित समायोजन, आधुनिक वायु रक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही सेना की योजना "स्मार्ट और प्रोग्रामेबल गोला-बारूद" को L-70 और ZU-23mm तोपों के लिए अपनाने की है, जिससे पुराने हथियार भी आधुनिक रूप में पुनः उपयोगी हो सकें। यह न केवल तकनीकी दृष्टि से बुद्धिमानी है, बल्कि वित्तीय रूप से भी व्यवहारिक है।

देखा जाये तो भारतीय वायु रक्षा तंत्र अब तीन स्तरों पर सुदृढ़ होता दिखाई दे रहा है। पहला- आकाश, MR-SAM और S-400 जैसी प्रणालियाँ, दूसरा- QRSAM जैसी स्वदेशी मिसाइलें और तीसरा- AK-630, L-70, ZU-23 जैसे त्वरित प्रतिक्रिया तोप तंत्र। देखा जाये तो यह त्रिस्तरीय ढाँचा किसी भी संभावित "स्वार्म अटैक" (झुंड में आने वाले ड्रोन या रॉकेटों के समवेत हमले) के विरुद्ध भारत को एक मजबूत रक्षात्मक कवच प्रदान करेगा।

इसके साथ एक और संकेत स्पष्ट है कि भारत अब "प्रतिक्रिया" नहीं, बल्कि "पूर्व-सक्रिय रक्षा" (proactive defence) के चरण में प्रवेश कर रहा है। तेज़ खरीद, स्वदेशी प्रणालियों पर बल, और नेटवर्क-केंद्रित कमांड एंड कंट्रोल सिस्टम, ये सब मिलकर भारत की रक्षा नीति को एक नये युग में ले जा रहे हैं, जहाँ तकनीकी आत्मनिर्भरता और सामरिक तत्परता समानांतर रूप से विकसित हो रही हैं।

बहरहाल, यह कहना उचित होगा कि AK-630 जैसी प्रणालियाँ केवल सीमाओं की सुरक्षा के लिए नहीं, बल्कि एक व्यापक सामरिक संदेश हैं कि भारत अब 21वीं सदी के युद्ध-क्षेत्र की चुनौतियों को समझ चुका है और उनके समाधान के लिए निर्णायक कदम उठा रहा है। यह निर्णय न केवल तत्कालीन खतरों का उत्तर है, बल्कि भविष्य की संभावनाओं के प्रति एक स्पष्ट तैयारी का प्रतीक भी है।

अभियान

ईश्वर अर्पण की परम साधना — भोग लगाने की दिव्य परंपरा और उसका आध्यात्मिक रहस्य

भोग अर्पण हिंदू धर्म की सबसे सुंदर, संवेदनशील और गूढ़ परंपराओं में से एक है। यह केवल पूजा-पद्धति का एक अंग नहीं, बल्कि यह वह क्षण है जब भक्त अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ ईश्वर के चरणों में समर्पित होता है। भोग लगाना दरअसल केवल भोजन चढ़ाना नहीं है, बल्कि यह एक भावनात्मक और आध्यात्मिक क्रिया है जिसमें मनुष्य अपने भीतर की कृतज्ञता, प्रेम और समर्पण को मूर्त रूप देता है। जब कोई भक्त सच्चे मन से ईश्वर को भोग लगाता है, तो वह यह स्वीकार करता है कि जीवन के हर सुख, हर साधन और हर अन्न का वास्तविक स्रोत स्वयं भगवान हैं। इसीलिए कहा गया है — "ईश्वर अर्पणं न त्यजेत्," अर्थात् जो कुछ मिले, वह पहले ईश्वर को समर्पित हो।

भोग लगाने की परंपरा का आधार अत्यंत पवित्र है। वेदों और पुराणों में वर्णित है कि जो भोजन हम ग्रहण करते हैं, उसमें केवल भौतिक ऊर्जा नहीं होती, उसमें सूक्ष्म ऊर्जा भी निहित रहती है। जब हम वह भोजन पहले ईश्वर को अर्पित करते हैं, तो उसकी ऊर्जा दिव्यता से स्पर्शित हो जाती है, और वही प्रसाद बनकर हमें वापस मिलती है। यह प्रसाद न केवल शरीर को पोषित करता है, बल्कि मन और आत्मा को भी शुद्ध करता है। इसी कारण संस्कृत में भोग को "नैवेद्य" कहा गया है — जिसका अर्थ है "ईश्वर को अर्पण की गई वस्तु"।

भोग अर्पित करने से पहले भोजन को सात्विक, स्वच्छ और पूर्ण श्रद्धा के साथ तैयार करना अनिवार्य माना गया है। इस भोजन को कभी भी पहले चखना नहीं चाहिए, क्योंकि यह केवल ईश्वर के लिए होता है। भोग को ऐसे पात्र में रखा जाना चाहिए जो केवल पूजा के लिए नियत हो — पीतल, चांदी या तांबे के बर्तन सबसे शुभ माने जाते हैं। लोहे या स्टील के बर्तनों में भोग अर्पित करना अशुभ माना गया है, क्योंकि ये धातुएँ ऊर्जात्मक दृष्टि से सकारात्मक तरंगें नहीं देतीं। भोग की थाली को सीधे जमीन पर रखने की भी मनाही है — उसे किसी लकड़ी के पाट या स्वच्छ आसन पर स्थापित करना चाहिए, जिससे अर्पण शुद्ध रहे।

अब यह प्रश्न आता है कि भोग ईश्वर के सामने कितनी देर रखा जाना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है कि भोग को भगवान के समक्ष पाँच से दस मिनट तक रखना सर्वोत्तम है। इस दौरान भक्त का मन पूर्ण एकाग्र होना चाहिए। उसे केवल यह भाव रखना चाहिए कि — "हे प्रभु! यह आपका ही दिया हुआ अन्न है, मैं इसे आपको समर्पित कर रहा हूँ, आप कृपा करके इसे स्वीकार करें।" इस समय सांसारिक विचारों, काम-काज या चिंताओं से मन को विराम देना चाहिए। कुछ परंपराओं में अधिकतम पंद्रह मिनट तक भोग रखने का विधान है, लेकिन इससे अधिक देर तक भोग को नहीं छोड़ना चाहिए।

यदि कोई व्यक्ति भोग को घंटों या पूरी रात तक ईश्वर के सामने रख देता है, तो वह प्रसाद अपनी पवित्रता खो देता है। ऐसा इसलिए क्योंकि लंबे समय तक खुले वातावरण में रखे भोजन पर वायु के माध्यम से बाहरी ऊर्जा, धूल या नकारात्मक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। यह केवल भौतिक अशुद्धि नहीं, बल्कि ऊर्जात्मक असंतुलन भी उत्पन्न करता है। इसलिए भोग को समय पर उठा लेना और आरती के साथ उसे प्रसाद के रूप में स्वीकार करना ही श्रेष्ठ माना गया है।

भोग लगाने की विधि में मंत्रोच्चार का भी अत्यंत महत्व है। श्रीहरि विष्णु को भोग अर्पित करते समय "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का जाप, देवी लक्ष्मी के लिए "ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः" और भगवान शिव के लिए "ॐ नमः शिवाय" का उच्चारण अत्यंत शुभ फलदायक होता है। ये मंत्र केवल ध्वनि नहीं हैं, ये चेतन ऊर्जा के स्पंदन हैं, जो भोग को दिव्य स्पंदन प्रदान करते हैं। जब ये मंत्र वायु में गूंजते हैं, तो वातावरण में पवित्रता और शांति की तरंगें फैल जाती हैं।

भोग के साथ एक स्वच्छ जल का पात्र रखना चाहिए — यह केवल पूरक वस्तु नहीं, बल्कि प्रतीक है "जीवन के स्रोत" का। भोग को सदैव ढककर रखना चाहिए ताकि धूल या कीट उसमें न गिरें। भोग के बाद आरती करना और घंटी बजाना भी आवश्यक है। घंटी की ध्वनि केवल एक अनुष्ठानिक परंपरा नहीं है — यह उस ध्वनि ऊर्जा का संचार है जो नकारात्मक कंपन को दूर करके वातावरण को शुद्ध करती है।

भोग अर्पण का वास्तविक सार इस भाव में निहित है — "हे प्रभु! यह जो कुछ मैं अर्पित कर रहा हूँ, वह वस्तुतः मेरा नहीं, यह सब आपका ही दिया हुआ है। मैं केवल आपका पात्र हूँ, और यह अर्पण आपके प्रति मेरी कृतज्ञता का प्रतीक है।" जब यह भावना जागृत होती है, तब भोग केवल भोजन नहीं रहता — वह आत्मा की भक्ति बन जाता है। भोग लगाने का यह कार्य हमें यह भी सिखाता है कि भक्ति का अर्थ केवल मंदिर या मूर्ति तक सीमित नहीं है। यह हमारे दैनिक जीवन की हर क्रिया में समर्पण का भाव जगाने की प्रक्रिया है। जब हम किसी वस्तु को ईश्वर को अर्पित करते हैं, तो हम अपने भीतर के "अहं" को त्यागकर "मैं नहीं, केवल तुम" की भावना को जीते हैं। यही भावना हमें सच्ची शांति और दिव्यता के पथ पर अग्रसर करती है।

इसलिए जब भी आप भगवान को भोग अर्पित करें, उसे केवल परंपरा न समझें, बल्कि एक जीवंत संवाद के रूप में करें। ऐसा संवाद जिसमें शब्द नहीं, केवल भाव बोलते हैं। जब भावना शुद्ध होती है, तो ईश्वर स्वयं उसे स्वीकार करते हैं। और जब ईश्वर स्वीकार करते हैं, तो वही भोग हमारे जीवन में सौभाग्य, शांति और समृद्धि का रूप लेकर लौटता है।

भोग लगाना इसलिए केवल पूजा नहीं — यह प्रेम की साधना है, आत्मा की कृतज्ञता है और ईश्वर से मिलने का एक सूक्ष्म माध्यम है। यही वह क्षण है जहाँ भक्त और भगवान के बीच कोई दूरी नहीं रहती — केवल समर्पण की ज्योति जलती है, और उसी में संपूर्ण जीवन का प्रकाश समाहित हो जाता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

7 अक्टूबर – विश्व कपास दिवस

गुजरात 23.71 लाख हेक्टेयर कपास बुवाई क्षेत्र, 71 लाख गांठ उत्पादन और 512 किग्रा प्रति हेक्टेयर की उत्पादकता के साथ देश में दूसरे स्थान पर

▶▶ गुजरात की अर्थव्यवस्था में कपास की भूमिका अहम, गुजरात की स्थापना से लेकर अब तक राज्य की कपास उत्पादकता में 373 किग्रा प्रति हेक्टेयर की वृद्धि

▶▶ गुजरात द्वारा विकसित कपास की संकर-4 किस्म के बाद देश भर में शुरू हुए संकर कपास के दौर से भारत की कपास उत्पादकता में हुई भारी वृद्धि

> प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गत दो दशकों में कपास उत्पादन क्षेत्र में बदली गुजरात की तस्वीर
> –कृषि मंत्री श्री राघवजी पटेल

गांधीनगर : रोटी, कपड़ा और मकान को मनुष्य जीवन की तीन आधारभूत आवश्यकता माना जाता है। रोटी के बाद महत्वपूर्ण आवश्यकता कपड़ा के लिए कपास अत्यंत जरूरी है। उसी कपास के महत्व को उजागर करने के लिए दुनिया भर में प्रतिवर्ष 7 अक्टूबर को 'विश्व कपास दिवस' मनाया जाता है। 'सफेद सोना' के रूप में जाना जाने वाला कपास और गुजरात का नाता वर्षों पुराना है। गुजरात अनेक दशकों से कपास की खेती और अनुसंधान के मामले में जागरूक, प्रयासरत और अग्रणी रहा है।

भारत और गुजरात की अर्थव्यवस्था में कपास अत्यंत अहम भूमिका निभाता है। वर्ष 1960 में गुजरात की स्थापना के समय गुजरात की कपास उत्पादकता केवल 139 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी, जो आज बढ़कर लगभग 512 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई है, यह देश की औसत कपास उत्पादकता से अधिक है। इस आंकड़े से अनुमान लगाया जा सकता है कि अनुसंधान, विस्तारीकरण, सरकार के किसान-उन्मुख दृष्टिकोण और किसानों के अथक प्रयासों के कारण राज्य को कपास के माध्यम से अरबों रूपए की आय हुई है, जो किसी भी राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी बात है।

कृषि मंत्री श्री राघवजी पटेल ने कपास के संदर्भ में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि जब भारत आजाद हुआ, तब सूती कपड़ों की ज्यादातर मिलें भारत में ही रह गईं जबकि कपास के बेहतर उत्पादन करने वाले क्षेत्र पाकिस्तान के हिस्से में चले गए। नतीजतन, भारत में कच्चे माल की कमी के कारण हमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च करके विदेश से कपास आयात करना पड़ता था।

उन्होंने कहा कि वर्ष 1971 में सूरत स्थित अनुसंधान फार्म के माध्यम से विकसित की गई कपास की हाइब्रिड यानी संकर-4 नामक किस्म के बाद देश भर में संकर कपास का नया युग शुरू हुआ और जल्द ही भारत की कपास उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप भारत की कच्चे माल की जरूरत तो पूरी हुई ही, साथ ही अतिरिक्त उत्पादन का निर्यात भी होने लगा। वर्ष 2020-21 में भारत ने रिकॉर्ड 17,914 करोड़ रुपए मूल्य का कपास निर्यात किया।

कृषि मंत्री ने कहा कि गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में गत दो दशकों में कपास उत्पादन क्षेत्र में गुजरात की तस्वीर बदल गई है। उनके मजबूत नेतृत्व में हुए विभिन्न प्रयासों के कारण गुजरात में कपास का बुवाई क्षेत्र वर्ष 2001-02 तक 17.49 लाख हेक्टेयर था, वह 2024-25 तक बढ़कर 23.71 लाख हेक्टेयर हो गया है। इसके साथ ही, कपास का उत्पादन भी 17 लाख गांठ से बढ़कर 2024-25 में 71 लाख गांठ और उत्पादकता 165 किग्रा प्रति हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2024-25 तक 512 किग्रा प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई है।

कृषि मंत्री ने कहा कि गुजरात आज कपास के बुवाई क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता के मामले में पूरे देश में दूसरे स्थान पर है। चालू वर्ष 2025-26 में अब तक राज्य के कुल 21.39 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कपास की बुवाई हुई है और इस वर्ष भी कुल 73 लाख गांठ के उत्पादन का अनुमान है। आज गुजरात देश के कुल कपास बुवाई क्षेत्र में 20 फीसदी और कुल कपास उत्पादन में लगभग 25 फीसदी का योगदान देता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि राज्य सरकार की अनेक प्रोत्साहक योजनाओं और कपास संवर्धन के प्रयासों के चलते आने वाले समय में गुजरात देश भर में कपास उत्पादन का हब बनेगा और देश के कुल कपास उत्पादन में गुजरात का योगदान सबसे अधिक होगा।

कृषि मंत्री श्री राघवजी पटेल ने कहा कि बीटी कपास के दौर में भी पूरे देश में बीटी संकर किस्म विकसित करने और उसकी मान्यता प्राप्त करने में गुजरात अग्रणी रहा है। गुजरात सरकार के गहन प्रयासों से सार्वजनिक क्षेत्र की पहली दो बीटी संकर किस्मों - गुजरात कपास संकर-6 बीजी-2 और गुजरात कपास संकर-8 बीजी-2 को वर्ष 2012 में भारत सरकार की ओर से मान्यता मिली थी। इसके बाद, वर्ष 2015 में गुजरात ने दो और बीटी संकर किस्में - गुजरात कपास संकर-10 बीजी-2 और गुजरात कपास संकर-12 बीजी-2 विकसित कर किसानों को कपास की खेती के लिए बीटी कपास की चार किस्में उपलब्ध कराईं।

कृषि मंत्री ने कहा कि दुनिया भर में हो रही जनसंख्या वृद्धि के कारण भविष्य में प्राकृतिक रेशे, वस्त्रों, खाद्य तेल और पशु आहार के लिए कपास के बीज और खली की संभावित मांग आज के मुकाबले 2030 तक डेढ़ गुनी और 2040 तक दोगुनी होने की हो जाएगी। उन्होंने कहा कि इन जरूरतों को ध्यान में रखकर गुजरात, अनुसंधान, नवीन और उन्नत विचारों तथा घरेलू उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल कर कपास के निर्यात के जरिए देश की अर्थव्यवस्था में अहम योगदान दे सकता है।

पीडीईयू छात्र ने विकसित किया कम लागत वाला एआई-संचालित सिस्टम, जो इनडोर वायु को बनाएगा स्वच्छ

स्वास्थ्य तकनीक को सभी के लिए सुलभ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, पंडित दीनदयाल एनर्जी यूनिवर्सिटी (PDEU) के कंप्यूटर साइंस विभाग के अंतिम वर्ष के छात्र औम पंड्या ने एक कम लागत वाला, बुद्धिमान इनडोर वायु गुणवत्ता मॉनिटरिंग सिस्टम विकसित किया है। यह नवाचार सटीक वायु मॉनिटरिंग की उच्च लागत की समस्या को दूर करता है, जिससे घरों और कार्यालयों में इसका उपयोग संभव हो जाता है। कंप्यूटर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. राजीव गुप्ता और पीएच.डी. शोधार्थी श्रीमती हितेश्री याग्निक के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए, औम ने एक ऐसा सिस्टम तैयार किया है जो सस्ते सेंसरों का उपयोग करके सामान्य इनडोर प्रदूषकों, तापमान और आर्द्रता का पता लगाता है। इस आविष्कार का मुख्य आधार एक क्लाउड-आधारित मशीन लर्निंग मॉडल है। यह एआई-संचालित तकनीक रीयल-टाइम में सेंसर डेटा को कैलिब्रेट करती है, पर्यावरणीय कारकों की भरपाई करती है और अत्यंत सटीक एवं विश्वसनीय एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) रीडिंग प्रदान करती है — जो आमतौर पर केवल महंगे उपकरणों में ही संभव होती है। इनडोर वायु प्रदूषण एक बढ़ती हुई स्वास्थ्य समस्या है, जो थकान से लेकर श्वसन संबंधी बीमारियों तक के कारणों से जुड़ी है। एक किफायती और सटीक मॉनिटरिंग उपकरण बनाकर, इस परियोजना ने लोगों को अपने वातावरण को समझने और समय रहते वायु गुणवत्ता में सुधार करने की क्षमता दी है।

औम वर्तमान में इस सिस्टम को लागू करने की प्रक्रिया में हैं। उनका यह कार्य, जो कंप्यूटर साइंस और पर्यावरण इंजीनियरिंग के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है, पीडीईयू में प्रोत्साहित किए जाने वाले अंतर्विषयक नवाचार की संस्कृति को दर्शाता है और यह दिखाता है कि छात्र वास्तविक जीवन की समस्याओं के लिए कितने प्रभावशाली समाधान विकसित कर सकते हैं।

भावनगर रेलवे मंडल पर स्वच्छता पखवाड़ा–2025 के अंतर्गत "स्वच्छ रेलगाड़ी" थीम पर विशेष अभियान का आयोजन

दिनांक 05.10.2025 एवं 06.10.2025 को स्वच्छता पखवाड़ा–2025 के अंतर्गत "स्वच्छ रेलगाड़ी" थीम पर विशेष अभियान आयोजित किया गया। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में एवं वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर श्री एस के मिश्रा के नेतृत्व में पोरबंदर, भावनगर एवं वेरावल कोचिंग डिपो में ५ ट्रेनों की गहन यांत्रिक सफाई (Intensive Mechanized Cleaning) अत्याधुनिक उपकरण द्वारा की गई।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि स्वच्छता पखवाड़ा–2025 के अंतर्गत आयोजित अभियान के दौरान कोचों के फर्श, शौचालय, खिड़कियाँ, दरवाजे तथा सीटों की मशीनों द्वारा स्वच्छता सुनिश्चित की गई। टीमों ने पर्यावरण अनुकूल सफाई सामग्री का उपयोग करते हुए यात्रियों को स्वच्छ एवं आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करने का संकल्प लिया। साथ ही, स्टाफ को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया तथा "स्वच्छ रेल–स्वच्छ भारत" का संदेश दिया गया।

इस पहल से डिपो क्षेत्रों में स्वच्छता स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ तथा रेल कर्मचारियों में कार्यस्थल स्वच्छ रखने की भावना को और बल मिला। इसके पश्चात स्वच्छता पखवाड़ा–2025 के तहत पोरबंदर, भवनगर एवं वेरावल स्टेशन पर यात्रियों के लिए जागरूकता अभियान आयोजित किया गया जिसमे कैरेज एंड वैगन स्टाफ द्वारा बायो टॉयलेट के उपयोग संबंधी Do's and Don'ts समझाए गए तथा यात्रियों को स्वच्छता बनाए रखने का संदेश दिया गया।

7 अप्रैल 2026 तक भुज-पालनपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस निरस्त

पश्चिम रेलवे द्वारा तकनीकी कारणों से भुज-पालनपुर-भुज इंटरसिटी एक्सप्रेस को अस्थाई तौर पर निरस्त किया गया है तथा गांधीधाम-पालनपुर-गांधीधाम एक्सप्रेस ट्रेन यथावत समयानुसार चलेगी। विवरण निम्नानुसार हैः
ट्रेन संख्या 20928/20927 भुज-पालनपुर-भुज इंटरसिटी एक्सप्रेस 07 अप्रैल 2026 तक निरस्त रहेगी जबकि ट्रेन संख्या 19405/19406 गांधीधाम-पालनपुर-गांधीधाम एक्सप्रेस पूर्वत चलेगी। ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन कर सकते है।

कंबोडिया से संचालित साइबर ठगी गिरोह का पर्दाफाश, चार राज्यों में चला बड़ा अभियान

नई दिल्ली। साइबर अपराध की दुनिया में सक्रिय एक अंतरराष्ट्रीय ठगी गिरोह का दिल्ली पुलिस ने भंडाफोड़ किया है, जो कंबोडिया से बैठकर भारतीय नागरिकों की मदद से करोड़ों रुपये की साइबर ठगी कर रहा था। दक्षिण-पश्चिमी जिला साइबर थाना पुलिस की टीम ने हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में एक साथ छापेमारी कर पांच आरोपियों — मंगू सिंह, हरि किशन सिंह, अक्षय, मुकुल और विक्रम — को गिरफ्तार किया है। यह गिरोह शेयर बाजार और आईपीओ में निवेश का झांसा देकर लोगों को ऑनलाइन ग्रुप्स के माध्यम से फंसाता था।

पुलिस उपायुक्त अमित गोयल के अनुसार, जांच में खुलासा हुआ कि यह गिरोह कंबोडिया में बैठे साइबर संचालकों से सीधे जुड़ा था, जो टेलीग्राम के 'एटीपे' ग्रुप के जरिए भारत में सक्रिय सदस्यों को निर्देश भेजते थे। ठग पहले निवेशकों को व्हाट्सएप या टेलीग्राम ग्रुप में जोड़ते, फिर शुरुआती निवेश पर छोटा लाभ दिखाकर भरोसा जीतते थे।

कंबोडिया में बैठकर भारतीयों की मदद से करते थे ठगी, पांच आरोपी हुए गिरफ्तार

नई दिल्ली। दक्षिण-पश्चिमी जिला साइबर थाना पुलिस ने एक बड़े बहुराज्यीय अभियान में उस साइबर ठग गिरोह का पर्दाफाश किया है, जो शेयर बाजार और आईपीओ में निवेश पर दोगुना फायदा देने का झांसा देकर करोड़ों रुपये की ठगी कर रहा था। पुलिस ने हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में छापेमारी कर पांच आरोपियों — मंगू सिंह, हरि किशन सिंह, अक्षय, मुकुल और विक्रम — को गिरफ्तार किया है। जांच में सामने आया कि यह गिरोह कंबोडिया में सक्रिय साइबर नेटवर्क से जुड़ा हुआ था। पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने बताया कि गिरोह निवेशकों को ऑनलाइन ग्रुप के जरिए झांसे में लेता था और विदेश से मिले निर्देशों पर काम करता था।

शिकायतकर्ता आर. चौधरी ने बताया कि उन्हें एक वाट्सएप ग्रुप में जोड़ा गया, जहां ऊंचे मुनाफे का लालच देकर निवेश के लिए उकसाया गया। शुरुआत में आरोपियों ने छोटी रकम पर लाभ देकर भरोसा जीता और बाद में 10.7 लाख रुपये निवेश करवा लिए। जब चौधरी ने पैसे निकालने की कोशिश की तो भुगतान रोक दिया गया। इंस्पेक्टर प्रवेश कौशिक के नेतृत्व में एसआई चेतन राणा, हेड कांस्टेबल मनेंद्र और विजयपाल की टीम ने डिजिटल फुटप्रिंट, मनी ट्रेल और फर्जी खातों की जांच के आधार पर कार्रवाई की।

वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी स्टेशन पर अपग्रेडेशन, कार्य के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित

उत्तर मध्य रेलवे के झांसी मंडल के वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी स्टेशन पर 25 नवंबर, 2025 से 8 जनवरी, 2026 तक चल रहे अपग्रेडेशन कार्य के मद्देनजर पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः-

निरस्त होने वाली ट्रेनें:

1. 30 नवंबर, 2025 से 4 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09043 बांद्रा टर्मिनस-बढ़नी स्पेशल
2. 1 दिसंबर, 2025 से 5 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09044 बढ़नी-बांद्रा टर्मिनस स्पेशल
3. 30 नवंबर, 2025 से 4 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 05560 उधना-रक्सौल स्पेशल
4. 29 नवंबर, 2025 से 3 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 05559 रक्सौल-उधना स्पेशल

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनें:

1. 29 नवंबर, 2025 से 3 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09189 मुंबई सेंट्रल-कटिहार स्पेशल परिवर्तित मार्ग वाया प्रयागराज छिवकी-मानिकपुर-कटनी मुरवारा-बीना स्टेशनों के रास्ते चलाई जायेगी।
2. 25 नवंबर, 2025 से 06 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09190 कटिहार-मुंबई सेंट्रल स्पेशल परिवर्तित मार्ग वाया बीना-कटनी मुरवारा-मानिकपुर-प्रयागराज छिवकी स्टेशनों के रास्ते चलाई जायेगी।
3. 25 नवंबर, 2025 से 06 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 04156 उधना-सूबेदारगंज स्पेशल परिवर्तित मार्ग वाया इटारसी-सतना-मानिकपुर-प्रयागराज स्टेशनों के रास्ते चलाई जायेगी।
4. 01 दिसंबर, 2025 से 05 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 04155 सूबेदारगंज-उधना स्पेशल परिवर्तित मार्ग वाया प्रयागराज-मानिकपुर-सतना-इटारसी स्टेशनों के रास्ते चलाई जायेगी।
5. 28 नवंबर, 2025 से 02 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09465 अहमदाबाद-दरभंगा स्पेशल परिवर्तित मार्ग वाया गुना-ग्वालियर-इटावा-कानपुर सेंट्रल स्टेशनों के रास्ते चलाई जायेगी।
6. 01 दिसंबर, 2025 से 05 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09466 दरभंगा-अहमदाबाद स्पेशल परिवर्तित मार्ग वाया कानपुर सेंट्रल-इटावा-ग्वालियर-गुना स्टेशनों के रास्ते चलाई जायेगी।
7. 26 नवंबर, 2025 से 07 जनवरी, 2026 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 14320 बरेली-इंदौर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया ग्वालियर-गुना-बीना स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी।

आपदा में मिलकर काम करेंगे तीन एजेंसियां दिल्ली में समझौता पत्र पर हुआ हस्ताक्षर

नई दिल्लीः रेलवे सुरक्षा बल (RPF), भारतीय रेल आपदा प्रबंधन संस्थान (IRIDM) और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) के बीच आज नई दिल्ली में एक त्रिपक्षीय समझौता (MoU) पर हस्ताक्षर किया गया। इस समझौते का उद्देश्य रेल सुरक्षा बल को प्रशिक्षित 'फर्स्ट रिस्पॉन्डर्स' बल के रूप में तैयार करना है जो आपदा के गोल्डन आवर में त्वरित बचाव और राहत कार्य कर सके। यह साझेदारी रेल सुरक्षा को एक नई दिशा प्रदान करेगी और आपदा प्रबंधन में भारतीय रेल की क्षमता को और सशक्त बनाएगी। इस अवसर पर नेशनल डिजास्टर रिलीफ फोर्स के महानिरीक्षक नरेंद्र सिंह बुंदेला, IRIDM के निदेशक वी. वी. एस. श्रीनिवास तथा जगजीवन राम रेल सुरक्षा बल अकादमी, लखनऊ के निदेशक बी. वेंकटेश्वर राव ने समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस समझौता के तहत RPF कर्मियों को NDRF बटालियन में लघु-अवधि के प्रशिक्षण दिए जाएंगे। जिनमें आपदा प्रतिक्रिया, खोज एवं बचाव, बाढ़/जल-आपदा प्रबंधन, प्राथमिक उपचार और संयुक्त अभ्यास जैसे विषय शामिल होंगे। इसके बाद IRIDM, बेंगलुरु में संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जहां RPF और NDRF कर्मी एक साथ भाग लेंगे। MoU के अंतर्गत JR RPF अकादमी, लखनऊ को प्रशिक्षण के लिए नोडल संस्थान के रूप में नामित किया गया है। यह कार्यक्रम पूरे देश में रेलवे सुरक्षा विशेष बल के लिए लागू होगा। इसके माध्यम से आपदा प्रतिक्रिया के क्षेत्र में RPF एवं NDRF के बीच एक सुदृढ़ सहयोग ढाँचा तैयार होगा, जो देश भर में रेल यात्रियों की सुरक्षा को एक नई ऊँचाई पर ले जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में गांधीनगर स्थित दक्षिण पश्चिमी वायु कमान में गरिमामय ढंग से मनाई गई भारतीय वायु सेना की 93वीं वर्षगांठ

> प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय वायु सेना ने दुनिया को अप्रतिम शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया
> –मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति में सोमवार को गांधीनगर स्थित दक्षिण पश्चिमी वायु कमान (एसडब्ल्यूएसी-स्वैक) मुख्यालय में भारतीय वायु सेना की 93वीं वर्षगांठ गरिमामय ढंग से मनाई गई।

मुख्यमंत्री ने इस कमान के वायु सैनिकों सहित एयर फोर्स परिवार को 93वीं वर्षगांठ की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारतीय वायु सेना ने हमेशा देश का गौरव बढ़ाया है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय वायु सेना का पिछला दशक स्वर्णिम दशक बना है।

उन्होंने कहा कि कुछ महीने पहले ही प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायु सेना ने अपनी कार्यकुशलता और दक्षता से दुनिया को जिस साहस और पराक्रम का परिचय दिया है, उस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय वायु सेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने सफलतापूर्वक अंतरिक्ष मिशन पूरा कर जो बड़ा कीर्तिमान स्थापित किया है, वह वायु सेना की इस 93वीं वर्षगांठ को एक विशेष गौरव प्रदान करने वाली घटना है।

श्री भूपेंद्र पटेल ने दक्षिण पश्चिमी वायु कमान की सराहना करते हुए कहा कि वह वायु सीमा की सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक दायित्व में भी योगदान दे रहा है। प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान, एक पेड़ मां के नाम, फिट इंडिया मुवमेंट और अंतरराष्ट्रीय योग दिवस जैसे सामाजिक अभियानों में 'स्वैक' सक्रिय भागीदार रहा है। उन्होंने वायु सेना परिवार की महिलाओं द्वारा संचालित 'संगिनी' संगठन की सामाजिक और कल्याणकारी कार्यों की पहल की भी प्रशंसा की।

दक्षिण पश्चिमी वायु कमान के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ एयर मार्शल श्री नागेश कपूर ने स्वागत भाषण के माध्यम से मुख्यमंत्री का स्वागत किया और वायु सेना की वर्षगांठ की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

समारोह में मुख्य सचिव श्री पंकज जोशी, सीनियर एयर स्टाफ ऑफिसर श्री एस. श्रीनिवास सहित वायु सेना के अधिकारी, वायु सैनिक और उनके परिवारजन शामिल हुए। एयरफोर्स बैंड की सुमधुर धुनों ने समारोह को शौर्य और उत्साह से भर दिया।

श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में गुजरात की अविरत विकास यात्रा के सफल 24 वर्ष पूर्ण

विकास सप्ताह के दौरान आयोजित होने वाले मुख्य कार्यक्रम :-

- मुख्यमंत्री, मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी लेंगे 'भारत विकास प्रतिज्ञा', साथ ही सरकारी कार्यालयों, स्कूल-कॉलेजों और ऑनलाइन माध्यम से भी ली जाएगी प्रतिज्ञा
- साबरमती रिवरफ्रंट में फ्लैगशिप योजनाओं की प्रदर्शनी
- ऑनलाइन क्विज और निबंध प्रतियोगिता, व्याख्यान माला, पदयात्रा तथा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम- 'नमोत्सव' का आयोजन
- रोजगार मेले में नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम
- 1 से 25 करोड़ रुपए तक के 3,326 करोड़ रुपए के कार्य

राज्य की 24 वर्षों की संकल्प सिद्ध की गाथा को जन-जन के बीच उजागर करने के लिए 7 से 15 अक्टूबर तक विकास सप्ताह का शानदार आयोजन
-प्रवक्ता मंत्री श्री ऋषिकेश

गांधीनगर : प्रवक्ता मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल ने प्रेस वार्ता में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 अक्टूबर, 2001 को गुजरात के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला था। 7 अक्टूबर, 2001 से शुरू हुई गुजरात के विकास की अविरत यात्रा 7 अक्टूबर, 2025 को सफलतापूर्वक 24 वर्ष पूरे कर रही है।

इसके अंतर्गत, गुजरात की संकल्प सिद्धि की इस बहुआयामी विकास यात्रा और जनहितकारी सुशासन की गाथा को जन-जन के बीच उजागर करने के लिए 7 से 15 अक्टूबर के दौरान पूरे राज्य में हर्षोल्लास के साथ 'विकास सप्ताह' मनाया जाएगा।

प्रवक्ता मंत्री ने कहा कि इस विकास सप्ताह के दौरान कुल 10 विभागों की प्रत्यक्ष सहभागिता के साथ 13 विषयों को शामिल किया गया है और प्रत्येक दिवस को अलग-अलग थीम के साथ मनाया जाएगा। इस दौरान युवा, महिला और किसान सहित राज्य के सभी वर्गों की सहभागिता सुनिश्चित करने का भी आयोजन किया गया है। इस आयोजन में लोगों को विकास कार्यों की जानकारी देने के साथ-साथ विकासात्मक कार्यों से लाभान्वित भी किया जाएगा।

उन्होंने आगे कहा कि इस वर्ष विकास सप्ताह के दौरान राज्य भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इसके अंतर्गत विधानसभा प्रांगण में मुख्यमंत्री, मंत्री और वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में भारत विकास प्रतिज्ञा ली जाएगी। इसी समय, राज्य के 34 जिलों में भी कलेक्टर कार्यालय एवं अन्य सरकारी कार्यालयों, स्कूल-कॉलेजों में 'भारत विकास प्रतिज्ञा' ली जाएगी। इस प्रतिज्ञा को व्यापक स्वरूप पर ले जाने के लिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि माईगव (My.Gov) पोर्टल पर बड़ी संख्या में ऑनलाइन प्रतिज्ञा ले सकें। इस कार्यक्रम के द्वारा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल विकास सप्ताह की औपचारिक शुरुआत करेंगे।

07-10-2025
युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम

प्रवक्ता मंत्री ने कहा कि 7 से 15 अक्टूबर के दौरान अहमदाबाद के साबरमती रिवरफ्रंट में फ्लैगशिप योजनाओं की प्रदर्शनी, पूरे राज्य में ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन, स्कूलों और कॉलेजों में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन, व्याख्यान माला, महत्वपूर्ण स्थलों पर पदयात्रा, प्रतिदिन 'नमोत्सव' सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, क्रिकेटर हार्दिक पंड्या और तिलक वर्मा के साथ पॉडकास्ट, वडोदरा की महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ यूनिवर्सिटी में आयोजित कार्यक्रम में 1000 से अधिक छात्र भाग लेंगे, जहां विकसित भारत@2047 के संकल्प को पूर्ण करने के लिए युवाओं की सहभागिता विषय पर चिंतन-मंथन किया जाएगा। इसके अलावा, पूरे सप्ताह के दौरान 50 अन्य स्थानों पर भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

आत्मनिर्भर भारत

प्रवक्ता मंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए गए जीएसटी सुधारों और सहकारिता क्षेत्र को पहुंचाए गए लाभों के लिए सहकारी संस्थानों के सभासदों द्वारा प्रधानमंत्री को एक करोड़ से अधिक पोस्टकार्ड के जरिए श्री मोदी के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए 7 अक्टूबर को कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

प्रधानमंत्री के दूरदर्शी मार्गदर्शन में देश के विकास के लिए उठाए गए विभिन्न कदमों से अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंचे सामाजिक और आर्थिक लाभ तथा देश में आए बदलाव के लिए प्रधानमंत्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सहकारिता विभाग द्वारा 1 करोड़ से अधिक पोस्टकार्ड तैयार किए गए हैं। आत्मनिर्भर भारत, गर्व से कहो स्वदेशी है, आयुष्मान भारत, वित्तीय समावेशन, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) और सोलर रूफटॉप योजना तथा 22 सितंबर से लागू किए गए जीएसटी सुधार जैसे विभिन्न विषयों पर पोस्टकार्ड लिखे गए हैं।

उल्लेखनीय है कि डाक विभाग द्वारा प्रतिवर्ष 1.50 करोड़ पोस्टकार्ड छापे जाते हैं, जबकि केवल गुजरात में सहकारिता क्षेत्र एवं शिक्षा विभाग द्वारा बहुत ही अल्पकाल में 1 करोड़ से अधिक पोस्टकार्ड लिखे गए हैं, जो कि एक अभूतपूर्व उपलब्धि है।

7 अक्टूबर को अहमदाबाद स्थित साबरमती रिवरफ्रंट में पोस्टकार्ड प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया है, जिसे नागरिक देख सकते हैं।

इसके अलावा, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग के जरिए भी राज्य के अलग-अलग कॉलेजों के छात्रों द्वारा प्रधानमंत्री के स्वदेशी अभियान, ऑपरेशन सिंदूर, जीएसटी क्रांति और भारत को अग्रणी बनाने की पहल का स्वागत करते हुए पोस्टकार्ड के जरिए प्रधानमंत्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है। जिसमें उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग द्वारा कुल 4.50 लाख पोस्टकार्ड लिखे गए हैं।

इसके अतिरिक्त, स्वदेशी अभियान के अंतर्गत 100 कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों में व्याख्यानों का भी आयोजन किया गया है, जिनमें से 62 व्याख्यान पूरे हो चुके हैं। जिनमें विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा छात्रों को यह बताया गया है कि कैसे स्वदेशी अपनाने से राज्य और राष्ट्र को समृद्ध एवं उत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

08-10-2025
रोजगार मेला कार्यक्रम

प्रवक्ता मंत्री ने कहा कि गांधीनगर में राज्य स्तरीय कार्यक्रम के साथ ही अन्य 33 जिलों में भी राज्यव्यापी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

जिनमें 50 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए जाएंगे। इसके अलावा, 25 हजार से अधिक आईटीआई छात्रों को प्रोविजनल प्लेसमेंट ऑफर पत्रों का वितरण भी किया जाएगा।

इतना ही नहीं, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) के उन्नयन के लिए उद्योगों के साथ 100 से अधिक समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

09-10-2025 और 10-10-2025
मेहसाणा में वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस

प्रवक्ता मंत्री ने बताया कि मेहसाणा में वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस के अंतर्गत एमएसएमई कॉन्क्लेव, उद्यमिता सहायता मेला, वेंडर डेवलपमेंट कार्यक्रम, रिवर्स क्रेता-विक्रेता बैठक, क्षेत्रीय पुरस्कार, अग्रणी उद्योगपतियों, बिजनेस लीडरों और युवाओं की अपनी विकास यात्रा के अनुभवों तथा ये क्षेत्र विकसित गुजरात@2047 के विजन में किस प्रकार योगदान कर सकते हैं, इस पर चर्चा, स्टार्टअप हैकाथॉन, स्टार्टअप द्वारा पिचिंग सेशन और उद्यमियों द्वारा उत्पादों की प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा।

11 अक्टूबर, 2025

प्रवक्ता मंत्री ने कहा कि राज्य स्तरीय कार्यक्रम राजकोट में आयोजित होगा। इस विभाग की विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को लाभों का वितरण, पंचायत उन्नति सूचकांक के बारे में मार्गदर्शन, विभिन्न योजनाओं के तहत श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली ग्राम पंचायतों का सम्मान, ग्राम गृह निर्माण बोर्ड से जुड़ी घोषणाएं, राज्य की सभी ग्राम पंचायतों में पंचायत घर (भवन) का सामूहिक शिलान्यास किया जाएगा।

इसके अलावा, 15-10-2025 को रथयात्रा समापन के समय प्रत्येक जिले में 1 करोड़ से कम राशि वाले कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सूचना एवं प्रसारण विभाग के सहयोग से प्रति जिला एक विकास रथ का आयोजन तथा सभी सरकारी संस्थाओं में 'स्वच्छता शपथ' दिलाई जाएगी।

12 एवं 13 अक्टूबर, 2025
राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन

प्रवक्ता मंत्री ने कहा कि इस दिन नगर पालिकाओं के विकास कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास कार्यक्रम, स्वदेशी मेला (शॉपिंग फेस्टिवल) का आयोजन, सभी महानगर पालिकाओं में स्थानीय कलाकारों के सहयोग से रिसाइकल की गई वस्तुओं का उपयोग कर सार्वजनिक स्थापत्य का निर्माण और सभी महानगर पालिकाओं के प्रसिद्ध सार्वजनिक स्थलों की दीवारों पर भित्ति चित्र बनाना जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

14 अक्टूबर, 2025
कृषि विकास दिवस/ रबी कृषि महोत्सव

प्रवक्ता मंत्री ने कहा कि राज्य व्यापी कार्यक्रम का शुभारंभ, रबी कृषि महोत्सव के अंतर्गत फसल परिसंवादों एवं किसान मार्गदर्शन, कृषि प्रदर्शनी, पशु स्वास्थ्य मेले, नई टेक्नोलॉजी आधारित प्रदर्शनी-स्टॉल जैसी अनेक किसान-उन्मुख गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा।

15 अक्टूबर, 2025
शिलान्यास एवं लोकार्पण के कार्यक्रम

प्रवक्ता मंत्री ने बताया कि गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में लोकार्पण एवं शिलान्यास का राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा, जिसमें 1 करोड़ रुपए से 25 करोड़ रुपए तक के 3326 करोड़ रुपए के कार्य शामिल हैं।

उन्होंने आगे कहा कि 7 से 15 अक्टूबर के दौरान शिक्षा विभाग द्वारा भी हैकाथॉन, निबंध प्रतियोगिता, भित्ति चित्र, क्विज स्पर्धा, 100 व्याख्यान माला, वेबिनार वर्कशॉप और रिसर्च पेपर, यूनिवर्सिटी में लखपति दीदी और ड्रोन दीदी के सेमिनार तथा दस 'स्वामी विवेकानंद कॉम्पिटिटिव एग्जामिनेशन स्टडी सेंटर' का लोकार्पण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है।

स्वास्थ्य विभाग

विकास सप्ताह के दौरान स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग उच्च जोखिम वाले प्रसव के लक्षणों वाली लगभग 1700 गर्भवती माताओं की पहचान करेगा, उन्हें बर्थ माइक्रो प्लान के बारे में समझाएगा, नमोश्री योजना के अंतर्गत लगभग 10,000 लाभार्थियों का पंजीकरण और डीबीटी के जरिए लगभग 7 करोड़ रुपये का भुगतान करेगा तथा प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना के तहत 6000 से अधिक लाभार्थियों को डीबीटी के माध्यम से लगभग 1.5 करोड़ रुपये का भुगतान करेगा।

इसके अलावा, वय वंदना योजना के अंतर्गत 70 वर्ष से अधिक उम्र के 14,000 लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड का वितरण, विकास सप्ताह के दौरान स्थानीय विधायकों और पदाधिकारियों द्वारा टीबी के निदान के लिए 180 टूनैट मशीनों के लोकार्पण कार्यक्रम, राज्य के 24 मेडिकल कॉलेजों के माध्यम से सीपीआर (कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन) प्रशिक्षण का आयोजन, 10 अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन, प्रति जिला एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) सहित कुल 34 मॉडल सीएचसी बनाने का संकल्प, पॉडकास्ट के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता, स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान (एसएनएसपीए) के तहत किए गए कार्यों का ई-बुक के माध्यम से लॉन्चिंग किया जाएगा।

प्रवक्ता मंत्री ने बताय कि इस सप्ताह के दौरान सूचना एवं प्रसारण विभाग द्वारा '24 वर्ष सफल और सक्षम नेतृत्व के' शीर्षक वाली एक पुस्तिका का प्रकाशन, माईगव (My.Gov.India) पोर्टल पर विकास सप्ताह क्विज कंपीटिशन का आयोजन और इसी पोर्टल पर फोटो और रील कंपीटिशन का आयोजन किया जाएगा।

गुजरात सरकार

International Year of Cooperatives 2025
Cooperatives Build a Better World

विकास सप्ताह
२४ साल जनविश्वास, सेवा और समर्पण के

अंतर्गत

आत्मनिर्भर भारत
हर घर स्वदेशी, घर घर स्वदेशी

देश में NextGen GST और स्वदेशी अभियान के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाकर सभी को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के उद्देश्य के साथ

गुजरात के किसान और नागरिक
७५ लाख से अधिक आभार पोस्टकार्ड भेजकर
आत्मनिर्भर भारत के प्रणेता

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विश्व रिकॉर्ड बनाएंगे।

POST CARD

50 भारत INDIA

स्वदेशी अपनाएं, आत्मनिर्भर भारत बनाएं

मुख्य अतिथि
श्री भूपेंद्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

विशेष अतिथि

श्री कनुभाई देसाई
माननीय मंत्री, गुजरात

श्री ऋषिकेश पटेल
माननीय मंत्री, गुजरात

श्री जगदीश विश्वकर्मा
माननीय राज्य मंत्री, गुजरात

तारीख: ०७ अक्टूबर २०२५ | समय: शाम ५:०० बजे
स्थान: वल्लभ सदन, साबरमती रिवरफ्रंट, अहमदाबाद

VIKSIT BHARAT विकसित भारत

सीधा प्रसारण: CMOGuj CMOGuj CMOGujarat CMOGujarat